RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में निर्देशन–आवश्यकताओं का अध्ययन

[1]डॉ0(श्रीमती) ममता अरोरा; [2]सुरेन्द्र पाल

[1]विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज–शान्तिकुंज, हरिद्वार
[2]शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज–शान्तिकुंज, हरिद्वार

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि एवं निर्देशन आवश्यकताएं।

ABSTRACT

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना, उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना, उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस शोध में वर्णानात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध के न्यादर्श हेतु जिला हरिद्वार के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं गैर–सरकारी 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि की लाटरी विधि के द्वारा चयन किया गया। प्रदत्तो का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं एफ परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध परिणामों में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवयश्कता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्रथम श्रेणी प्राप्त विद्यार्थियों में निर्देशन की अधिक आवश्यकता पायी गयी है परन्तु शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक क्षेत्र में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया का शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवयश्कता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

मानव जीवन का एक अहम् पहलू है उसका विद्यार्थी जीवन। मानव जीवन के इस पहलू पर इसका सम्पूर्ण जीवन निर्भर है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था अब विद्यार्थी केन्द्रित हो गई है। आज बालक को उसकी रुचियों व योग्यता के अनुसार शिक्षा देने पर बल दिया जाता है और पाठ्यक्रम में भी विभिन्नताऐं आ रही हैं अतः निर्देशन और भी आवश्यक हो गया है। पुरातन समय में औपचारिक व अनौपचारिक रूप से निर्देशन व परामर्श प्राप्त हो जाता था। शिक्षा में निर्देशन व परामर्श गुरुजनों द्वारा कर दिया जाता था। व्यक्तिगत, शैक्षिक, व्यवसायिक, विद्यालयोत्तर व स्वाध्याय आदि निर्देशन संबंधित सभी बातें वेद व उपनिषदों में मिल जाती थी। नैतिकता का ज्ञान उस समय पंचतन्त्र या बड़ों व गुरूजनों द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों से हो जाता था। आधुनिक समय की जटिलता के कारण आज अनेकों प्रकार की विरोधाभास, कुण्ठा व भग्नाशा आदि से सम्बन्धित समस्याऐं उत्पन्न हो रही है। इन सबकी वजह से नैतिकता का लगातार पतन होता जा रहा है तथा मूल्यों का ह्रास। किशोरों की समस्या सर्वाधिक है। वे तीव्र गति से परिवर्तित सामाजिक–आर्थिक बदलावों का सामना नही करने योग्य होते हैं तथा दुविधा में रहते है। विकास के इस दौर में आज निर्देशन को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है **(भटनागर, 2000)।**

वर्तमान समय में विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर भी गिरता जा रहा है। विद्यार्थी बहुत ही कम अंकों से उत्तीर्ण होते हैं क्योंकि इस स्तर पर आते ही वे अनुशासनहीन हो जाते हैं तथा अपने शिक्षण के उद्देश्य व अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं तथा ऐसा करके वे अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। निर्देशन उन्हें सही निर्देशित कर भविष्य निर्माण में सहयोग करता है। विशिष्ट बालकों हेतु भी विशिष्ट निर्देशन व परामर्श कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है तथा सेवा भी प्रदान की जाती है। यहां निर्देशनप्रदाता व परामर्शदाता की भूमिका इस प्रकार मुख्य हो जाती है कि वे उन विद्यार्थियों को सही दिशा प्रदान करते हैं जिसके द्वारा वह कक्षा में न बिताए जाने वाले समय का धनात्मक रूप से उपयोग कर सके।

अनेक शोधकर्ताओं ने अपने शोधकार्यों में विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्कताओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का वर्णन किया है। **हडसमैन (1986)** ने स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निर्देशन सेवाओं का सार्थक धनात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार **फ्रान्सिस (1987)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों के संचार माध्यमों, अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि पर निर्देशन सेवाओं का सार्थक धनात्मक प्रभाव पड़ता है। **गुप्ता व भटनागर (1999)** का मत है कि विद्यार्थियों की श्रेष्ठ उपलब्धि के लिए आवश्यक है कि उनके समक्ष आने वाली समस्याओं तथा कठिनाईयों को दूर किया जाए और यह कार्य

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निर्देशन के द्वारा सुगमता तथा सरलता से किया जा सकता है। **ब्राडोक (2001)** के अनुसार निर्देशन द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होता है, विद्यालय, अधिगम तथा कार्य के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, द्वन्द्व का सामना करने के कौशलों का निर्माण होात है तथा ड्रॉपआऊट दर में कमी आती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1 उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णानात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध के न्यादर्श हेतु जिला हरिद्वार के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं गैर–सरकारी 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि की लाटरी विधि के द्वारा चयन किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तो का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं एफ परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तो का विश्लेषण निम्नलिखित है–

सारणी –1(क)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन

विद्यालय का प्रकार	शैक्षिक उपलब्धि का स्तर	संख्या	शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता	
			मध्यमान	मानक विचलन
सरकारी	प्रथम	143	11.58	7.12
	द्वितीय	130	12.33	6.63
	तृतीय	27	17.51	6.71
	कुल	300	12.44	7.05
गैर–सरकारी	प्रथम	179	12.17	6.32
	द्वितीय	102	13.73	6.75
	तृतीय	19	16.26	5.31
	कुल	300	12.96	6.49
कुल	प्रथम	322	11.91	6.68
	द्वितीय	232	12.94	6.71
	तृतीय	46	17.00	6.13
	कुल	600	12.70	6.78

सारणी 1(क) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन प्रस्तुत किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 11.58, 12.33 एवं 17.51 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम व द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

को शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है जबकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन की औसत आवश्यकता है।

दूसरी ओर गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 12.17, 13.73 एवं 16.26 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम व द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन की औसत आवश्यकता है।

सारणी – 1(ख)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों का योग	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
विद्यालय का प्रकार	1	87.684	87.684	1.979	असार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	2	1110.326	555.163	12.533**	सार्थक
अन्तःक्रिया	2	71.101	35.551	0.803	असार्थक
समूहों के मध्य	6	98047.841	16341.307		
समूहों के अन्तर्गत	594	26312.159	44.297		

**** = 0.01 सार्थकता स्तर**

सारणी 1(ख) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

स्वतन्त्रता अंश 1 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 1. 979 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 3.84 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 12. 533 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 4.60 (0.01 सार्थकता स्तर) से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 0.803 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 2.99 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वितीय एफ मान सार्थक पाया गया है जबकि प्रथम व तृतीय एफ मान असार्थक पाये गये हैं। अतः उप–परिकल्पना कि ***"उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर है"*** आंशिक रूप से निरस्त एवं मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 2(क)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन

विद्यालय का प्रकार	शैक्षिक उपलब्धि का स्तर	संख्या	सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता	
			मध्यमान	मानक विचलन
सरकारी	प्रथम	143	11.72	6.38
	द्वितीय	130	12.33	5.58
	तृतीय	27	13.55	5.50
	कुल	300	12.15	5.97
गैर–सरकारी	प्रथम	179	11.89	5.80
	द्वितीय	102	11.50	4.94
	तृतीय	19	13.10	5.73
	कुल	300	11.83	5.51

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कुल	प्रथम	322	11.81	6.05
	द्वितीय	232	11.96	5.31
	तृतीय	46	13.36	5.54
	कुल	600	11.99	5.74

सारणी 2(क) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन प्रस्तुत किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 11. 72, 12.33 एवं 13.55 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन की अति उच्च आवश्यकता है जबकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है।

दूसरी ओर गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 11. 89, 11.50 एवं 13.10 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम व द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन की अति उच्च आवश्यकता है जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है।

सारणी – 2(ख)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों का योग	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
विद्यालय का प्रकार	1	10.430	10.430	0.315	असार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	2	92.379	46.189	1.396	असार्थक
अन्तःक्रिया	2	33.485	16.742	0.506	असार्थक
समूहों के मध्य	6	86468.920	14411.487		
समूहों के अन्तर्गत	594	19648.080	33.078		

सारणी 2(ख) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

स्वतन्त्रता अंश 1 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 0. 315 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 3.84 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 1. 396 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 2.99 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 0.506 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 2.99 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय एफ मान असार्थक पाये गये हैं। अतः उप–परिकल्पना कि ***"उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर है"*** पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी – 3(क)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन

विद्यालय का प्रकार	शैक्षिक उपलब्धि का स्तर	संख्या	मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता	
			मध्यमान	मानक विचलन
सरकारी	प्रथम	143	12.65	7.19
	द्वितीय	130	14.75	7.60
	तृतीय	27	18.62	9.34
	कुल	300	14.10	7.75
गैर–सरकारी	प्रथम	179	13.39	7.17
	द्वितीय	102	13.09	7.28
	तृतीय	19	19.63	8.60
	कुल	300	13.69	7.44
कुल	प्रथम	322	13.06	7.18
	द्वितीय	232	14.02	7.49
	तृतीय	46	19.04	8.96
	कुल	600	13.89	7.59

सारणी 3(क) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान तथा मानक विचलन प्रस्तुत किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 12.65, 14.75 एवं 18.62 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन की अति उच्च आवश्यकता है जबकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है।

दूसरी ओर गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का मध्यमान क्रमशः 13.39, 13.09 एवं 19.63 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् प्रथम व द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन की अति उच्च आवश्यकता है जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन की उच्च आवश्यकता है।

सारणी – 3(ख)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों का योग	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
विद्यालय का प्रकार	1	3.942	3.942	0.071	असार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	2	1423.724	711.862	12.839**	सार्थक
अन्तःक्रिया	2	208.231	104.115	1.878	असार्थक
समूहों के मध्य	6	117499.784	19583.297		
समूहों के अन्तर्गत	594	32933.216	55.443		

**** = 0.01 सार्थकता स्तर**

सारणी 3(ख) में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

स्वतन्त्रता अंश 1 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 0.071 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 3.84 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 12.839 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 4.60 (0.01 सार्थकता स्तर) से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्वतन्त्रता अंश 2 एवं 594 पर विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता का एफ मान 1.878 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 2.99 (0.05 सार्थकता स्तर) से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वितीय एफ मान सार्थक पाया गया है जबकि प्रथम व तृतीय एफ मान असार्थक पाये गये हैं। अतः उप–परिकल्पना कि ***''उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी–गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर है''*** आंशिक रूप से निरस्त एवं मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

परिणाम

- सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन की सबसे अधिक आवश्यकता पायी गयी है।
- विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की शारीरिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं पाया गया है।
- सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की सामाजिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं पाया गया है।
- सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन की सबसे अधिक आवश्यकता पायी गयी है।
- विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि की अन्तःक्रिया के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में निर्देशन–आवश्यकता में अन्तर नहीं पाया गया है।

शोध के निहितार्थ

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं पर शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक प्रभाव पाया गया है। यह पाया गया है कि प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को निर्देशन की अधिक आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से यह सुझाव दिया जा सकता है कि विद्यालय प्रबन्धकों तथा प्रशासकों द्वारा उनकी इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास किया जाना चाहिए। विद्यालय व्यवस्थापकों को अपने विद्यालय में समय–समय पर निर्देशन व परामर्श हेतु सेमिनार, कार्यशाला एवं मनोविज्ञान परीक्षण आदि का आयोजन कराया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी योग्यताओं, क्षमताओं व दक्षताओं को समझ सके तथा उसके अनुरूप अपनी समस्याओं को हल करने के योग्य बन सके। माध्यमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु एक निर्देशक की व्यवस्था की जानी चाहिए जिसके समक्ष विद्यार्थी अपनी समस्याओं तथा भावनाओं को अभिव्यक्त कर सके तथा अपनी समस्याओं का समाधान कर सके। अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को समुचित शैक्षिक, व्यक्तिगत, व्यवसायिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक निर्देशन दिया जाना चाहिए। अध्यापकों द्वारा समय–समय पर विद्यार्थियों से निर्देशन सम्बन्धित समस्याओं व उनकी आवश्यकताओं पर चर्चा की जानी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **हड्समैन, जे0 (1986).** काउन्सलिंग इन स्कूल्स : एजेन्शियल सर्विसेज एण्ड कोम्प्रिहेन्सिव प्रोग्राम्स. नीडहम : एलिन एण्ड बेकन।
2. **फ्रान्सिस, आर0एल0 (1987).** इफैक्ट्स ऑन काउन्सलिंग ऑन सैल्फ कन्सेप्ट. जर्नल ऑफ प्रोफेशनल स्कूल काउन्सलिंग, 8(1), 50–80।
3. **ब्राडोक, जे0डी0 (2001).** इफैक्ट्स ऑफ कैरियर एजुकेशन ऑन एकेडमिक अचीवमैन्ट. न्यूयार्क : वार्डस नॉर्थ।
4. **भटनागर, ए0 एवं गुप्ता, एन0 (1999).** गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग. अंक – 2, नई दिल्ली : नेशनल काउन्सिल ऑफ एजुकेशन।
5. **भटनागर, ए0 (2000).** गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग. अंक – 1 एवं 2, ए थ्योरिटिकल पर्सपेक्टिव : विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

RRIJM 2015, All Rights Reserved